हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रश्न :- जैन साहित्य क्या है ?

उत्तर :- जिस प्रकार हिन्दी के पूर्वी क्षेत्र में सिद्धों ने बौद्ध धर्म के वज्रयान मत का प्रचार हिन्दी - कविता के माध्यम से किया, उसी प्रकार पश्चिमी क्षेत्र में जैन साधुओं ने भी अपने मत का प्रचार हिन्दी-कविता के माध्यम से किया। इन कवियों की रचनाएँ आचार, रास, फागु, चरित आदि विभिन्न शैलियों में मिलती हैं, आचार- शैली के जैन- काव्यों में घटनाओं के स्थान पर उपदेशात्मकता को प्रधानता दी गयी है। फागु और चरित- काव्य शैली की सामान्यता के लिए प्रसिद्ध है। 'रस' शब्द संस्कृत-साहित्य में क्रीड़ा और नृत्य से सम्बन्धित थी। भरत मुनि ने इसे 'क्रीड़नीयक' कहा है। वात्स्यायन के 'कामसूत्र' के रचनाकाल तक 'रास' में गायन का भी समावेश हो गया था। अभिनवगुप्त ने 'रास' को एक प्रकार का रूपक माना है। लोक-जीवन में भी श्रीकृष्ण की लीलाओं के लिए 'रास' शब्द रूढ़ हो गया था और आज भी सामान्य जनता उसी अर्थ में इसका प्रयोग करती है। जैन -साधुओं ने 'रास' को एक प्रभावशाली रचना -शैली का रूप दिया। जैन- तीर्थंकरों के जीवन-चरित तथा वैष्णव- अवतारों की कथाएँ जैन आदर्शों के आवरण में 'रास' नाम से पद्यबद्ध की गयीं। जैन मन्दिरों में श्रावक लोग रात्रि के समय ताल देकर 'रास' का गायन करते थे। 15वीं शताब्दी तक इस पद्धति का प्रचार रहा। अतः जैन-साहित्य का सबसे अधिक लोकप्रिय रूप 'रास' ग्रन्थ बन गये, वीरगाथाओं में 'रास' को ही 'रासो' कहा गया है, किन्तु उनकी विषय-भूमि जैन रास-ग्रंथों से भिन्न हो गई है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न- जैन साहित्य क्या है ? प्रकाश डालें ?

पता
डॉ० समदर्शी कुमार, विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० नं०- 7909046087, दिनांक - 17.02.2022